DOI: 10.51220/hjssh.v8i1.7

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 8 pp.55 -58, December, 2013, ISSN. 0975 - 9891

गढ़वाल का जनजीवन : संस्कृति एवं इतिहास

गुड्डी बिष्ट
हिन्दी विभाग,
हे0न0ब0 गढवाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पौड़ी परिसर-246001

Received: 26-11-2013 **Revised: 09-12-2013** **Accepted: 17-12-2013**

ABSTRACT

विश्व का यह अनोखा भू-भाग (गढ़वाल) देवभूमि कहलाया। अति प्राचीन काल से ही इसका अपना विशेष महत्व रहा है। जिस पर्वतराज की बन्दना करके महाकवि कालिदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कुमार सम्भव' की रचना की, जिसकी कन्दराओं में ध्यानस्थ होकर ऋषियों, मुनियों और साधकों ने साधनाएँ की, जिसके विराट सौन्दर्य को गढ़वाल शैली के प्रसिद्ध चित्रकार मौलाराम, निकोलस रोरिक, गोविन्द जैसे महान चित्रकारों ने अपने तूलिका से चित्रफलक पर उकेरा, उस गढ़वाल की सांस्कृतिक समृद्धि का इतिहास उतना ही समृद्ध है। गढ़वाल का जनजीवन जितना सरल, ममतामय, करूणामय, दयामय, प्रेममय एवं प्रकृतिमय है, उतना ही गहरा इसका सांस्कृतिक महत्व एवं ऐतिहासिक परिचय है। यहाँ की कल-कल बहती नदियों एवं झरनें यहाँ का परिचय प्रकृतिमय होकर देते हैं। गढ़वाल की सम्पूर्ण धरा मानवता को जन्म देती है। प्रेम और सम्मान देना यहाँ का व्यक्ति कभी नहीं भूलता। 'अतिथि देवो भव:' की संस्कृति यहाँ पर अविरल रूप से प्रवाहमान है।

KEY WORDS-उत्तराखण्ड, गढ़वाल, संस्कृति, इतिहास, जनजीवन, प्रेम सद्भावना, शक्ति पीठ और सिद्ध पीठ।

अति प्राचीन काल से ही उत्तराखण्ड का अपना विशेष महत्व रहा है, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि विश्व का अकेला यह प्रदेश देवभूमि कहलाया, इस हेतु इसका धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक भौगोलिक आदि महत्व विशिष्टतम है। उपर्युक्त सभी तत्वों से मिश्रित होकर यहाँ की संस्कृति का निर्माण हुआ। जिस पर्वतराज की बन्दना करके महाकवि कालिदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कुमार सम्भव' की रचना की, जिसकी कन्दराओं में ध्यानस्थ होकर ऋषियों, मुनियों और साधकों ने साधनाएँ की, जिसके विराट सौन्दर्य को गढ़वाल शैली के प्रसिद्ध चित्रकार मौलाराम, निकालस रोरिक, गोविन्द जैसे महान चित्रकारों ने अपने तूलिका से चित्रफलक पर उकेरा, उस गढ़वाल की सांस्कृतिक समृद्धि का इतिहास उतना ही समृद्ध है, जितनी प्रकृति द्वारा दी गई उसकी सुन्दरता, इतनी सुरम्य प्रकृति एवं ऋषि-मुनियों की तपोस्थली वाला यह क्षेत्र अपनी संस्कृति और परम्पराओं के साथ कितना गौरवान्वित होगा, यह अनुमान इस भूमि का स्पर्ष करके ही जाना जा सकता है। मानव का मानव के प्रति सहज प्रेम ही लोक संस्कृति का साध्य रहा है, और गढ़वाल क्षेत्र की संस्कृति एवं जनजीवन की पहली विशेषता भी सहज प्रेम ही है।

डॉ0 शिवानन्द नौटियाल 'गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव' में लिखते हैं कि-''गढ़ों का आधिक्य होने के कारण-'गढ़' शब्द में 'वाला' प्रत्यय लगाने से 'गढ़वाल' नाम सन् 1515 ई0 के लगभग पड़ा।[1] पं0

©SHARAD

हरिकृष्ण रतूड़ी ने गढ़वाल के इतिहास में 52 ठाकुरी गढ़ों का उल्लेख किया है। इन गढ़ों पर विभिन्न जाति के ठाकुरी राजाओं का शासन था।[2] जहाँ तक गढ़ों का सम्बन्ध है यह अति प्राचीन है। ऋगवेद में भी गढ़वाल के 100 गढ़ों का विवरण आया है।[3] अतः स्पष्ट है कि गढ़वाल की परम्परा प्रागैतिहासिक काल से ही, गौरवशाली चली आ रही है।

डॉ0 शिवानन्द नौटियाल आगे लिखते हैं कि-'मनु के जल प्लावन के पश्चात् जिस मनोरम स्थान पर सृष्टि की रचना हुई, वह स्थान इसी भू-भाग (गढ़वाल) में अलकापुरी के समीप ब्रह्मावर्त के अति निकट है। आदि मानव ने यहीं मानव जीवन प्रारम्भ किया था। बदरीनाथ के समीप गणेशगुफा, नारदगुफा, मुचुकुन्द गुफा, व्यास गुफा तथा स्कन्धगुफा हैं। ये ही वे गुफाएँ हैं जहाँ वेदों और पुराणों की रचना हुई। ऋगवेद (10-27-19) के अनुसार सप्त-ऋषियों के जल प्रलय के बाद (आज का माणा) माणा ग्राम में ही प्राणरक्षा की थी और पुनः सृष्टि रचना में लग गये थे। इन्ही सप्त ऋषियों (मारीचि, अंगिरा, अत्रि, अगस्त्य, भृंगु, वसिष्ठ और मनु) से अनेक वंश चले। पं0 हरिराम घस्माणा ने अपनी 'सभ्यसमाज का मूल स्थान' नामक पुस्तक में मारीचि के वंशज मारीच्या (मार्च्छया) बताये हैं, और इसी प्रकार सप्त-ऋषियों के वंशजों का विस्तार और उल्लेख किया है।[4]

मानव की उत्पत्ति के समय से ही गढ़वाल हिमालय का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। ऋगवेद आर्यों के समय से ही गढ़वाल हिमालय और उसकी अनेक श्रृंखलाओं का गुणगान प्रारम्भ हो गया था। गंगा, यमुना, अलकनन्दा,मन्दाकिनी और जाह्नवी आदि गंगाओं का यशोगान बहुत पहले से ही मिलता है। भारतीय आर्यों की सभ्यता और संस्कृति के जितने साक्षी गढ़वाल के पर्वत, नदी, नाले देवस्थान और ताल गुफाएँ हैं उतने किसी अन्य भाग के नहीं। भारतीय ज़नजीवन में गंगा और हिमालय पूरी तरह से छाये हुए हैं। इसीलिए भारत के प्राचीन साहित्य एवं इतिहास में गढ़वाल को स्वर्गभूमि,तपोभूमि,उत्तराखण्ड,बदरिकाश्रम,ब्रह्मपुर और रूद्र हिमालय आदि कई नामों से जाना गया है। पुराणों में गढ़वाल को केदारखण्ड के नाम से अधिक ख्याति मिली है।

गढ़वाल हिमालय जन जीवन हिमालय की भाँति उन्मुक्त, सरल और सहज है, यहाँ का मानव विचारों में उच्च और गंगा, यमुना की लोल लहरों की भाँति हृदय से निश्छल होता है। जिस भूमि में स्वयं भगवान शिव का निवास रहा हो वह भूखण्ड स्वयं में ही धन्य है। विश्व की संस्कृतियों में महान संस्कृति भारत की है और इस महान संस्कृति का उद्गम देवभूमि गढ़वाल है। कहना न होगा कि इन संस्कृतियों के आदि स्रोत गढ़वाल की भूमि से निःसृत हैं।

भारत के इतिहास में गढ़वाल का अपना अलग पौराणिक महत्व भी है क्योंकि संस्कृति निर्माता ऋषियों की तपोभूमि गढ़वाल ही है। डॉ0 नौटियाल लिखते हैं कि-'यों तो समस्त हिमालय पर्वत भारत का मुकुट है परन्तु मध्य हिमालय का क्षेत्र अपने विशिष्ठ गौरव के लिए सम्पूर्ण देश में आदरणीय है, इसी अंचल से गंगा, यमुना का जन्म होता है और इसी अंचल के स्वर्गिक स्थलों पर ऋषियों के आश्रम थे। आर्य संस्कृति का श्रीगणेश इसी क्षेत्र में हुआ था। वेदों का हिमवन्त यही है। पुराणों की स्वर्ग भूमि भी यही है। अतः वेद पुराण रामायण और महाभारत जैसे ग्रन्थों में इस अंचल की गौरव गाथा विस्तार से गाई गई है। मध्य हिमालय का गौरवशाली क्षेत्र आज का गढ़वाल मण्डल है। प्राचीन साहित्य में इस अंचल के प्रत्येक स्थल का वर्णन

विस्तार से किया गया है। वैदिक ऋषियों की कर्मभूमि और तपोभूमि भी रही थी। इसी कारण उन्होंने इस क्षेत्र की महिमा का गुणगान जी भरकर किया है और भारतीय वांड्मय की रचना भी यही रहकर की। यहीं से आर्य संस्कृति पल्लवित-पुष्पित होकर आगे बढ़ी है। मध्य हिमालय के इस 'गढ़वाल मण्डल' क्षेत्र की महिमा का गुणगान युगों-युगों से होता रहा है।[5]

गढ़वाल के प्रत्येक अंचल में देवी-देवताओं का निवास है गढ़वाल की सम्पूर्ण धारा शैव व शाक्त अर्थात शिव एवं शक्ति की पूजित धारा है इसके हर कोने-कोने में शिवालय एवं आदि शक्ति पीठ और सिद्ध पीठ स्थापित हैं। यहाँ का कण-कण देवतामय है इसीलिए यहाँ का व्यक्ति धर्मप्राण होता है। ईश्वर में उसकी असीम आस्था होती है इसी कारण यहाँ का जन जीवन आध्यात्मवादी हो गया है। गढ़वाल क्षेत्र का मानव देवी-देवताओं के अलावा भूत-प्रेतों तक के अस्तित्व में आस्था रखता है। यहाँ की देवपूजित संस्कृति यहाँ के मानव को अत्यधिक सम्बल देती है।

डॉ0 शिवानन्द नौटियाल ने लिखा है कि-'गढ़वाल हिमालय पूर्णतः पहाड़ी प्रदेश है देहरादून के कुछ भागों को छोड़कर और तराई भाबर के अत्यल्प क्षेत्र को छोड़कर सम्पूर्ण गढ़वाल हिमालय पहाड़ियों में स्थित है। पहाड़ों की विकटता के अनुरूप यहाँ के लोगों का जीवन कठोर संघर्षों से भरा है। वर्षभर कठोर परिश्रम करना यहाँ के मानव के भाग्य में जन्म से लिखा है[6]। प्रकृति के साथ जीवन यापन करते-करते वह प्रकृतिमय हो गया है अर्थात ममतामय स्वच्छन्द निर्मल और सहज हृदय यह सब यहाँ के व्यक्ति ने प्रकृति से ही सीखा है। गढ़वाल की सम्पूर्ण धरा मानवता को जन्म देती है। प्रेम और सम्मान देना यहाँ का व्यक्ति कभी नहीं भूला है। 'अतिथि देवो भवः' की संस्कृति यहाँ पर अविरल रूप से प्रवाहमान है, यहाँ पर पहाड़ों से गिरते झरनों कल-कल बहती गंगा-यमुनी लहरों के मधुर संगीत में समाया हुआ मानव रंगीली प्रकृति का है और इस रंगीली प्रकृति में मनमौजी स्वभाव एवं शान्त वातावरण के कारण लोक उत्सव भी रंगीले हैं शान्त प्रकृति के कारण यह विश्व की एकमात्र भूमि तपोभूमि कहलाई और ऋषि एवं मुनियों ने यहाँ तप करके इस भूमि की शोभा बढ़ाई। विश्व प्रसिद्ध चार धाम बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमनोत्री इसी गढ़वाल की भूमि में विद्यमान हैं। इन चारों धामों की यात्रा करने के लिए भारत एवं विश्व के पर्यटकों का यहाँ तांता लगा रहता है। जहाँ तक जीवन यापन का प्रश्न है तो इस दिशा में गढ़वाल का व्यक्ति बड़े सम्मान से रहता है। गढ़वाल का गरीब से गरीब व्यक्ति भी भीख नहीं मांगता है, कुछ समय पूर्व शिल्पकारों की आर्थिक स्थिति अन्य लोगों की अपेक्षा कमजोर होती थी, परन्तु स्वाभिमानी गढ़वाली शिल्पकार भी कभी किसी के सम्मुख हाथ नहीं फैलाता है। आज बदलाव का दौर है और यहाँ का शिल्पकार भी सम्मान से जीता है। गढ़वाल का जीवन सहयोग और पारस्परिक मैत्री का जीवन है। गढ़वाल हिमालय में हिन्दुओं की जनसंख्या का बाहुल्य है, अन्य धर्म के लोगों की संख्या कम ही है और जो है भी वह गढ़वाल के ही रीति-रिवाज और खान-पान के तरीकों को अपनाते हैं और अपने को गढ़वालियों से पृथक नहीं मानते हैं। किसी भी धर्म का व्यक्ति यहाँ के प्रत्येक त्यौहार को परस्पर सहयोग और सद्भावना से मनाता है। पुराने समय की परम्पराऐं आज भी जीवित हैं क्योंकि अति आधुनिक होने पर भी समाज का व्यक्ति अपनी परम्पराओं से कटा नहीं इसका ज्वलन्त उदाहरण यह है कि विभिन्न जिलों में धार्मिक पूजा के समय यहाँ का व्यक्ति विदेशों से भी घर लौटकर आता है, चमोली जनपद की नन्दाराजजात यात्रा इसका ज्वलन्त उदाहरण है, जो बारह वर्षों के बाद उत्साह एवं उल्लास से मनाई जाती है। आज गढ़वाल

का व्यक्ति देश-विदेश के बड़े से बड़े पदों पर कार्य कर रहा है। देश की सेवा में उत्तराखण्ड के युवाओं की सबसे अधिक भागीदारी है।

गढ़वाल क्षेत्र में पहले से ही जीवन ममतामय है, गाँवों के लोग अपने सभी कार्यों को आपस में मिलकर सम्पन्न करते हैं। गाँव में यदि कोई विवाह सम्पन्न होता है तो वह सारे गाँव का विवाह होता है। लकड़ी पानी से लेकर भोजन खिलाने तक की सारी जिम्मेदारी गाँव के लोगों की होती है। गाँव की एक बेटी सम्पूर्ण गाँव की बेटी होती है, बारातियों की सेवा करने से लेकर भोजन खिलाने तक की सारी जिम्मेदारी गाँव के लोगों की होती है, रात में बारातियों को सुलाने तक की व्यवस्था भी गाँव वाले करते हैं, इसी तरह यदि किसी का मकान बन रहा हो तो गाँव वाले लकड़ी पत्थर चिनाई छवाई तक के कामों को मिलकर करते हैं। यदि किसी के खेत का काम पिछड़ गया हो तो सारे गाँव के लोग जाकर उस परिवार के खेत की बुवाई गुड़ाई और कटाई मंडाई आदि सब करते हैं। समूह में काम करना यहाँ की अनोखी विशेषता है, ऐसे सहयोगी जीवन में कभी किसी को कठिनाई नहीं होती है। यह व्यवस्था गाँव के हर व्यक्ति और प्रत्येक जाति के परिवार के साथ निभाई जाती है, इसलिए गाँव के अनाथ असक्त और वेसहारा व्यक्तियों का काम भी सहज रूप से सम्पन्न हो जाता है। आज के संदर्भ में देखे तो मुझे लगता है कि घुटन भरे शहरी जीवन, अपराध लूट-मार, चोरी डकैती, घरेलू हिंसा आदि से दूर गाँव का जीवन शान्ति का संदेश देता है, हमारे गढ़वाल क्षेत्र के गाँव की विशेषता अलग ही देखने को मिलती है जहाँ सुरम्य प्रकृति के बीच चोटियों में बसे गाँव में शहरों जैसी सुविधा अल्प होने पर भी आत्मिक शान्ति, प्रेम सद्भावना आदि सभी गुणों से सम्पन्न ये गाँव हमारी अविरल प्रवाहमान संस्कृति के द्योतक हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 शिवानन्द नौटियाल-गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव, पृ0 01।
2. श्री हरिकृष्ण रतूड़ी-गढ़वाल का इतिहास, पृ0 322, 331।
3. ऋग्वेद-4-30-20 में गढ़वाल के असुर राजा शाम्बर के 100 गढ़ों का उल्लेख आया है।
4. डॉ0 शिवानन्द नौटियाल-गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव, पृ0 01।
5. डॉ0 शिवानन्द नौटियाल-गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव, पृ0 32।
6. डॉ0 शिवानन्द नौटियाल-गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव, पृ0 54।
7. डॉ0 सरला चन्दोला-उत्तराखण्ड का लोक साहित्य एवं जनजीवन ।
8. डा0 गोविन्द चातक-भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भः मध्य हिमालय।